देश

बड़ी खबर.... उत्तराखंड में आगे भी ग्लेशियर टूटने की प्रबल संभावनाएं हैं – पर्यावरणविद, भरत राज सिंह

*Posted on April 28, 2021 Author*Ashutosh Tiwari Comment(0)

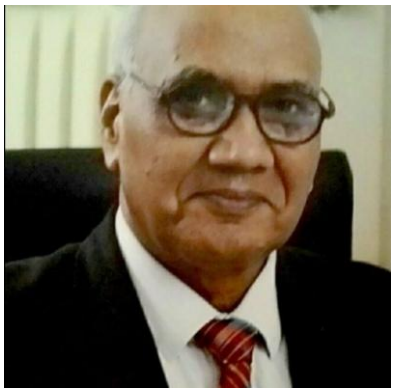

टुडे इंडिया न्यूज 24.com

https://www.todayindianews24.com/3274/

देश के अत्यंत सुंदर रमणीय क्षेत्र तथा देवभूमि के नाम से विख्यात उत्तराखंड में इधर कई वर्षों से ग्लेशियर टूटने की घटनाएं हो रही हैं। जिसमें अनेक लोगों की मौत भी हो गई ऐसी ही एक घटना फिर विगत शुक्रवार को जोशी मठ में ग्लेशियर टूटने से हुई जिसमें लगभग आधा दर्जन से अधिक लोगों की मौत हो गई तथा सैकड़ों लोगों को बचाया गया, जिससे वहां का जन जीवन भी पूरी तरह प्रभावित है। इस विषय पर ***टुडे इंडिया न्यूज 24.com नेटवर्क के संपादक आशुतोष तिवारी से वार्ता करते हुए स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेस, लखनऊ के महानिदेशक (तकनीकी) एवं वरिष्ठ पर्यावरणविद, डॉ.भरत राज सिंह*** ने कहा कि संपूर्ण विश्व में वैश्विक तापमान में लगातार बढ़ोतरी होने के कारण ऐसा हो रहा है। साथ ही उन्होने बताया कि हम अपने शोधपत्र के जरिए ऐसी घटना के बारे में सरकार को 2013 में ही आगाह कर दिये थे तथा प्रशासन को हमेशा ऐसी घटना से निपटने के लिए तैयार रहने की बात कहे थे। उन्होने कहा कि 2013, में केदारनाथ में जो घटना हुई थी उसके बाद किये गये शोध विश्लेषण में पाया गया कि

सम्पूर्ण विश्व में, वैश्विक तापमान में बढोत्तरी ग्रीन हाउस गैस के बढने से निरंतर हो रही है और 1.58 डिग्री सेंटीग्रेड से बढकर 3.0 डिग्री सेंटीग्रेड से अधिक हो गया है । आर्कटिक बर्फीले समुद्र का ग्लेशियर 2012 तक 30 प्रतिशत पिघल गया था जो अब लगभग 60 प्रतिशत पिघला हुआ पाया जा रहा है। तथा लगभग 600 ट्रिलियनटन ग्लेशियर टूट चुका है और बर्फ में जमें जीवाष्म भी बाहर आ रहे हैं। जिनके सूक्ष्म अणुओं के बारे में औषधि विज्ञान को अभी कोई जानकारी नहीं है। और नहीं पूरी दुनिया उससे उबर पाएगी । चूकि ग्लेशियर का तापमान उत्तरी ध्रुव पर लगभग़ माइनस (-)70-80 डिग्री सेंटीग्रेड तक और दक्षिणी ध्रुव पर माइनस (-)40-50 डिग्री सेंटीग्रेड तक विद्यमान है और वैश्विक तापमान में वृद्धि से इसके पिघलने में तेजी आ चुकी है l अतः एक सामान्य प्रक्रिया के तहत पहाड़ों पर पडी ग्लेशियर का तापमान जाड़े में बर्फवारी से पडनें वाली बर्फ से अधिक हो गयी है और अत्याधिक बर्फवारी से जिसका तापमान ग्लेशियर की बर्फ से कम होता है, उससे यह पुरानी गलेशियर पर चिपकती नहीं है। इससे अवलांच के आने की सम्भावना बढ जाती है और वह बर्फीले तूफान में बदल जाता है। उन्होने बताया कि 2013 में जो घटना हुई थी उसके बारे में उन्होने अपने लेख में 2012 के शोध पत्र को उजागर किया था । वही स्थिति पुनः उत्तराखंड के जोशीमठ के तपोवन परियोजना में भी तबाही के रूप में आया। उन्होने कहा कि मैंने अपने अध्ययन में यह भी बताया था कि केदारनाथ विभीषिका का कारण वैश्विक तापमान की वृद्धि से ग्लेशियर में दरारें पड जाना और प्रथम बारिश के समय ग्लेशियर की दरारों के बढ जाने से टूटने की सम्भावाना से नकारा नही जा सकता है। इस लिए सरकार को हमेशा सावधान रहना चाहिए ।

Ashutosh Tiwari